



# जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

## सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल  
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 136  
दिनांक 31.08.2022

## रिमोट सेंसिंग एवं जी.आई.एस. तकनीक कृषि के उत्तरोत्तर उन्नति में मील का पत्थर है— डॉ. अभिषेक शुक्ला

### सुंदर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना यंत्र का कृषि में अनुप्रयोग विषय पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण प्रारंभ

जबलपुर 31 अगस्त। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर में कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (नाहेप)के तहत 14वीं 21 दिवसीय प्रशिक्षण "सुंदर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना यंत्र का कृषि में अनुप्रयोग" विषय पर 31 अगस्त से 20 सितम्बर 2022 तक आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन की सद्प्रेरणा एवं सतत् मार्गदर्शन में यह 14वीं 21 दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ संचालक शिक्षण एवं प्रभारी अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. अभिषेक शुक्ला के मुख्यआतिथ्य में हुआ। इस दौरान डॉ. शुक्ला ने कहा कि कृषि क्षेत्र में बढ़ती डिजिटल तकनीक के साथ अपनी गति बनाये रखना चाहिये। पिछले कुछ वर्षों से रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. डिजिटलाइजेशन, निगरानी, प्रबंध और कृषि में संभावित विकास के क्षेत्रों में नये-नये नवाचार के रास्ते तेजी से बढ़े हैं। रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. तकनीक एजेंसियों को प्राकृतिक और मानव निर्मित विशेषताओं की विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। वर्तमान समय में हमारे कृषक इस तकनीक का उपयोग कर कृषि में बेहतर सुधार कर रहे हैं। जो कृषि के उत्तरोत्तर विकास में मील का पत्थर साबित होगी। रिमोट सेंसिंग एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली सेवाओं से प्रमुख रूप से फसल बोया गया, क्षेत्र का अनुमान, वनस्पति की गतिशीलता के आंकलन के लिये उपयोग, फसलों में विभिन्न रोगों की पहचान, मृदा के गुण, बाढ़ का प्रभाव, प्राकृतिक आपदा माडलिंग, जोखिम, मूल्यांकन के संभावित पूर्वानुमान व वैज्ञानिक अध्ययन, फसलों की क्षति का जैसे ओलावृष्टि, बागबानी वृक्षों की गिनती, फसलों के नुकसान का सूक्ष्म स्तर फसल मूल्यांकन में ड्रोन छवि विश्लेषण बहुत उपयोगी होते हैं।

कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट आतिथि डॉ. अतुल श्रीवास्तव अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय ने बताया कि वर्तमान में यह तकनीक कृषि के उत्तरोत्तर उन्नति व प्रगति में महत्वपूर्ण साबित होगी। नाहेप परियोजना प्रमुख डॉ. आर. के. नेमा ने प्रशिक्षण की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। भारत के तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, और मध्यप्रदेश आदि राज्यों से आये 24 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया है। जिन्हें सतत् 21 दिवस तक सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ ही रिमोट सेंसिंग एवं जी. आई. एस. तकनीक के सॉफ्टवेयर का बेहतर उपयोग, कार्य करना एवं कृषि के क्षेत्र में व प्रक्षेत्र पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। ताकि आगामी समय में अपने कार्य क्षेत्र में कौशल उन्नयन कर कार्य करेंगे। इस प्रशिक्षण में पी. एच. डी. छात्र-छात्रायें भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं, जो शोध के क्षेत्र में गुणोत्तर वृद्धि व कार्य करेंगे। कार्यक्रम का संचालन इजी. सौरभ नेमा एवं आभार प्रदर्शन डॉ. मनोज कुमार अवस्थी सह समन्वयक द्वारा किया गया। 21 दिवसीय प्रशिक्षण में समन्वयक की भूमिका डॉ. शैलेष शर्मा, सह समन्वयक डॉ. एम. के. अवस्थी, डॉ. बाय. के. तिवारी निभा रहे हैं। प्रशिक्षण के सफल संचालन में डॉ. आर. एन. श्रीवास्तव डॉ. एम. एल साहू, का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। उद्घाटन अवसर पर उप लेखानियंत्रक डॉ. अजय खरे, विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. पांडे, डॉ. ए. के. बाजपेयी, विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन सिंह, डॉ. ए. के. राय, सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. शेखर सिंह बघेल सहित अन्य वैज्ञानिकों की उपस्थिति रही।